Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जनजातीय क्षेत्रों में मौसमी पलायन के विभिन्न प्रभावों का अध्ययन (अलीराजपुर जिले के संदर्भ में एक अध्ययन)

सज्जनसिंह मौर्य*

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीराजपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ऐसा देखने में आया है कि सर्वाधिक औद्योगिक मजदूर ग्रामीण क्षेत्रों के निवासी होते हैं। अत: वे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए ही औद्योगिक शहरों की ओर जाते हैं और अवसर पाते ही वे अपने मूल ग्रामीण परिवार की ओर चले जाते हैं। किन्तु फिर से आर्थिक परिस्थतियाँ उन्हें औद्योगिक शहरों की ओर जाने को मजबूर करती है। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसे श्रमिकों की औद्योगिक कार्य में रूचि नहीं उत्पन्न हो पाती है।
शब्द कुंजी –मौसमी पलायन, जनजातीय क्षेत्र।

प्रस्तावना – भारत सरकार के आँकड़ों के अनुसार देश की 140 मिलियन ग्रामीण निर्धन जनसंख्या काम की तलाश में नगरों, उद्योगों एवं खेतों की ओर जाते हैं। ये पलायन करने वे लोग हैं, जो निर्माण, विनिर्माण, सेवाओं एवं कृषि क्षेत्र में आकस्मिक काम के लिए सदैव उपलब्ध रहते हैं। यह जनसंख्या भारत के असंगठित एवं अनौपचारिक कार्यबल का हिस्सा हैं, जो अपने ग्रामीण क्षेत्र में एवं शहरी, औद्योगिक तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अपने कार्य के स्थानों एवं सेवाओं और अधिकारों से बाहर रखा गया है। निर्धनता एवं मजदूरी, अनिश्चित रोजगार, और खतरनाक काम की स्थिति एवं आवश्यक सेवाओं की कमी प्रवासी मजदूरों के अनुभव को परिभाषित करती है। भारत में सार्वजनिक सुविधाओं तक पहुँच निवास के प्रमाण से जुड़ी हुई है, जो प्रवासियों के पास हैं, इसके फलस्वरूप सब्सिडी वाले खाद्यान्न, आवास, स्वास्थ्य देखभाल एवं स्थानीय लोगों के लिए उपलब्ध अन्य लाभों से वे वंचित हो जाते है। ग्रामीण मौसमी प्रवासी नगरों में मतदान करने में असमर्थ होते है, जो उनके अधिकारों को अलग कर देता है। परिणामत: प्रवासी हाशिये आ जाते है अर्थात् प्रवासी श्रमिक निर्माण स्थलों, ईंट के भट्टो या नगरों की सीमाओं पर प्रदूषित विनिर्माण क्षेत्रों में जीवन-यापन करते रहते हैं।

शोध विषय का चयन– मौसमी पलायन के कारण जनजाति वर्ग के पलायन करने वाले लोगों पर मौसमी पलायन के क्या प्रभाव हुए है ? इस महत्वपूर्ण बिन्दु को ध्यान में रखकर ही ही **'मौसमी पलायन करने वाली अनुसूचित जनजाति के परिवारों का समाजशास्त्रीय अध्ययन (अलीराजपुर जिले के विशेष संदर्भ में)'** नामक शोध विषय का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. जनजाति वर्ग के लोगों पर मौसमी पलायन के विभिन्न प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन का महत्व एवं क्षेत्र – जनजाति वर्ग के परिवारों द्वारा मौसमी पलायन किए जाने पर आधारित इस शोध कार्य का महत्व एवं प्रासंगिकता यह है कि इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हो सकेगा कि जनजातीय परिवारों के जीवन पर मौसमी पलायन से क्या प्रभाव पड़ता है?

निदर्शन प्रक्रिया – मौसमी पलायन करने वाली अनुसूचित जनजाति के परिवारों का समाजशास्त्रीय अध्ययन से संबंधित इस शोध कार्य में निदर्शन प्रक्रिया इस प्रकार से अपनाई गई है–

1. **अध्ययन के समग्र–** अध्ययन के समग्र के रूप में मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले की 05 तहसीलों में पलायन करने वाले अनुसूचित जनजाति परिवारों को शामिल किया गया है।
2. **अध्ययन की इकाई –** समग्र में से अध्ययन की इकाई के रूप में अलीराजपुर जिले की 05 तहसीलों में पलायन करने वाले अनुसूचित जनजाति परिवारों में से कुल 150 परिवारों का चयन किया गया है।

उत्तरदाताओं का चयन – शोध कार्य की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाताओं का चयन शोध कार्य के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर **सोद्देश्य प्रतिचयन विधि** से किया गया है। शोध कार्य के लिए उत्तरदाताओं के रूप में जिले की 05 तहसीलों में पलायन करने वाले अनुसूचित जनजाति परिवारों में से कुल 150 परिवारों का चयन किया गया है। उद्देश्यों को ध्यान में रखते हए जिले की प्रत्येक तहसील से कुल 30 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इस प्रकार जिले से कुल 150 (5 x 30) उत्तरदाताओं का चयन अध्ययन की इकाई के रूप में किया गया है।

आँकड़ों का संकलन – इस शोध कार्य की पूर्ति के लिए प्राथमिक आँकड़ों एवं द्वितीयक आँकड़ों का संकलन किया गया है।

आँकड़ों के संकलन के स्त्रोत – इस शोध कार्य के लिए **प्राथमिक आँकड़ों** का संकलन अध्ययन क्षेत्र से चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार-अनुसूची के माध्यम से किया गया है। वहीं द्वितीयक आँकड़ों का संकलन विभिन्न मानक पुस्तकों, शोध-प्रबंध एवं लघु शोध प्रबंध, विभिन्न शोध पत्र एवं पत्रिकाओं, विभिन्न विभागों के प्रकतवेदनों, भारत की जनगणना-2011, अलीराजपुर जिले की सांख्यिकी पुस्तिकाओं, शासकीय तथा अशासकीय विभागों की अधिकृत वेबसाइटस् से प्राप्त आँकड़ों एवं अभिलेखों के आधार पर किया गया है।

इस प्रकार संकलित किए गए प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का वर्गीकरण, श्रेणीकरण एवं सारणीकरण के बाद में तथ्यों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए, जिसके आधार पर शोध कार्य की प्रतिपूर्ति की गई है।

अध्ययन के महत्वपूर्ण निष्कर्ष:

1. **शासकीय योजनाओं के आर्थिक-सामाजिक प्रभावों के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार** अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाताओं आर्थिक-सामाजिक स्थिति पर शासकीय योजनाओं का प्रभाव पड़ता है।
2. **शासकीय योजनाओं से मौसमी पलायन में कमी आने के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार** अध्ययन क्षेत्र के ज्यादातर उत्तरदाताओं के अनुसार शासकीय योजनाओं से मौसमी पलायन में कमी नहीं आई है।
3. **सामाजिक कार्य/त्यौहार पर मौसमी पलायन से वापस आने के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार** अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक उत्तरदाता सामाजिक कार्य/त्यौहार पर मौसमी पलायन से वापस आ जाते है।
4. **सामाजिक कार्य/त्यौहार के बाद वापस जाने के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार** अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक उत्तरदाता सामाजिक कार्य/त्यौहार के बाद पलायन स्थल पर वापस चले जाते है।
5. **मौसमी पलायन से संस्कृति पर प्रभाव होने के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार** मौसमी पलायन से उत्तरदाताओं की संस्कृति प्रभावित नहीं होती है।
6. **मौसमी पलायन की अवधि में समस्याएँ होने के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार** सर्वाधिक उत्तरदाताओं को मौसमी पलायन की अवधि में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
7. **मौसमी पलायन की अवधि में समस्याओं के प्रकार के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार** मौसमी पलायन की अवधि मे सर्वाधिक उत्तरदाताओं को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है।

उपसंहार – उपर्युक्त विवेचन एवं निष्कर्ष से यह स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश के जनजातीय आधिक्य अलीराजपुर जिले के मौसमी पलायन करने वाले परिवारों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति पर शासकीय योजनाओं का प्रभाव पड़ता है। विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करने के बाद भी उनकी संस्कृति पर मौसमी पलायन का कोई प्रभाव नहीं होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत की जनगणना-2011
2. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका-अलीराजपुर।
3. शुक्ल,एस.एम.,सहाय,एस.पी.(2005)सांख्यिकीय के सिद्धांत, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा(उ.प्र.)।
4. सिंह, श्यामधर (1982), वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, कमल प्रकाशन, इन्दौर (म.प्र.)।

****